ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 138-142

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

ग्रामीण विकास में युवाओं की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. रत्नेश कुमार
2 डॉ0 पवन कुमार मिश्र

1. शोध अध्येता, 2 सहायक आचार्य– समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ0प्र0) भारत

Received-05.06.2022, Revised-09.06.2022, Accepted-12.06.2022 E-mail: ratnesshkumar181995@gmail.com

सारांशः – *प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण विकास में युवाओं की भूमिका एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। भारत गांवो का देश रहा है। ग्रामीण युवा आबादी का अनुपात भारत की युवा आबादी में बहुमत का हिस्सा है, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण आबादी को प्रभावित करती रहतीं है। देश की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के युवा वर्ग की है। और करीब 22 प्रतिशत युवा (15–24) आयु वर्ग के हैं। इसलिए भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। इस पत्र में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। कि ग्रामीण विकास में युवा अन्य लोगो की अपेक्षा किस प्रकार ऊर्जा, दक्षता, क्षमता, से अलग एवम विशिष्ट कार्य कर ग्रामीण विकास में भूमिका निभाते हैं। इस शोध पत्र में जिन क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है उसमें सामाजिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, कृषि संबंधित क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र (पंचायती राज), ग्रामीण क्षेत्रों में युवा श्रम बाजार, कौशल विकास प्रमुख है।*

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण विकास, युवा, कौशल विकास, ग्रामिण विकास कार्यक्रम, युवा नेतृत्व, भरतीय गाँव, पंचायती राज।

आज भारत की आबादी 130 करोड़ से अधिक है और इसका 62 प्रतिशत हिस्सा 59 वर्ष से कम आयु का है। आज भारतीय गांव पहले से ज्यादा सशक्त, ज्यादा सुविधासंपन्न और आर्थिक रूप से समृद्ध हुए हैं। और इसके प्रभाव से ग्रामीण युवा भी सशक्त हुए हैं। देश की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के युवा वर्ग की है। इस तरह भारत विश्व का सबसे युवा देश है। इसकी आबादी में गतिशील युवाओं की संख्या होना इस बात का प्रमाण है कि मौजूदा समय में युवा शक्ति और कार्यशील मानव संसाधन के रूप में भारत के पास विपुल संपदा उपलब्ध है। युवावस्था जीवन की सर्वाधिक ऊर्जावान, क्षमतावान अवस्था होती है। एक ओर ज्यादातर विकासशील देश बढ़ती उम्र की आबादी की चुनौती का सामना कर रहे हैं। वहीं इस मामले में भारत की जनसांख्यिकीय स्थिति बेहद अनुकूल है। एक अनुमान के मुताबिक 2020 तक भारत की आबादी 28 वर्ष औसत आयु वर्ग की होगी। जबकि अमेरिका में 38 वर्ष चीन में 42 वर्ष और जापान में 48 वर्ष है। (कुरुक्षेत्र जनवरी 19) राष्ट्रीय युवा नीति 2014 में 15–29 वर्ष के आयु समूह को युवा माना गया है, जो 27.5 प्रतिशत है। तथा 13–35 वर्ष के आयु समूह के युवा 41.3 प्रतिशत हैं। "युवा किसी निर्धारित आयु वर्ग से अधिक व्यापक श्रेणी है। प्रायः अनिवार्य शिक्षा छोड़ने तथा अपना रोजगार पाने के बीच वाली आयु के व्यक्ति को युवा माना जाता है।" संयुक्त राष्ट्र संघ ने 15–24वर्ष के आयु समूह को युवा माना है। इस नीति का उद्देश्य देश के युवाओं को अपनी पूर्ण क्षमताओं को विकसित करने के लिए सशक्त बनाना तथा उनके माध्यम से भारत को अंतरराष्ट्रीय समुदाय में उनका सही स्थान दिलाना है। इस नीति में भारत के आर्थिक विकास में स्थाई योगदान एवम उत्पादक श्रम शक्ति तैयार करने के लिए शिक्षा, रोजगार, कौशल और उद्यमशीलता को प्राथमिकता वाले क्षेत्र में रखा गया है। वही भविष्य की चुनौतियों का सामना करने एवम सक्षम मजबूत और स्वस्थ पीढ़ी का विकास करने के लिए स्वास्थ्य, स्वस्थ जीवन शैली, खेल को प्राथमिकता दी गई है (yas report)

"युवाओं की अवधारणा को शोधकर्ताओं ने एक अवधि के रूप में परिभाषित किया है, "जो व्यक्तिगत जीवन के बचपन के अंत से शुरू होता है और वयस्कता में प्रवेश करता है, जिसमे व्यक्ति परिपक्वता की आयु तक पहुंच गया है"। कृषि के मामले में विकास युवा शक्ति का गठन करता है युवाओं की मानसिकता है कि इस तरह से खेती की जाए जो उत्पादक साबित हो। युवा कृषि और ग्रामीण विकास के लिए अमूल्य साबित हुए हैं। वर्तमान समय में युवा संगठन कई गतिविधियों में शामिल हुए हैं, जैसे फसल बोना, सामुदायिक खेती, ग्राम चौराहों का निर्माण, वृद्धि में योगदान, विज्ञान और तकनीकी विधियों में अनुप्रयोग, ऊर्जा संरक्षण, जैव प्रौद्योगिकी और रोजगार सर्जन आदि। युवा आबादी बेहतर खेती के उपयोग के लिए प्रौद्योगिकी अनुसंधान गतिविधियों में शामिल हो रही है। नवाचार, तकनीक, विचार जो ग्रामीण विकास के लिए फायदेमंद हो सकते हैं, क्योंकि युवा समस्या का समाधान खोजने में अभिनव और रचनात्मक होते हैं, (Umar Odom 2011)। युवा भागीदारी का अर्थ है योगदान करना, साझाकरण या सदस्यता और भागीदारी। युवा भागीदारी के चार प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। सूचना साझाकरण, परामर्श, नीति निर्माण, संगठन के साथ अंतर क्रिया करना और प्रतिउत्तर प्राप्त करना। (Youth participation 2010)।

कृषि ग्रामीण क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय रहा है। वर्तमान समय में इस व्यवसाय के लिए व्यापक शोध, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, फसल सिंचाई जैसे बहुत से कार्य किए जा रहे है। युवा जो शिक्षित एवम कुशल है। वह इस कार्य को अच्छी तरह से कर सकते हैं। कृषि गतिविधियों का कैसे कार्यान्वित किया जाए युवाओं का ज्ञान इसमें सहायता प्रदान करता है।(bennell 2007)

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

ग्रामीण विकास की भूमिका में युवाओं का आकलन प्रतिशत में किया गया जिसमें पाया गया कि युवा ग्रामीण विकास में स्थाई रूप से भाग ले रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी से पीड़ित लोग और सामाजिक रुप से निराश लोग हैं जो अपने कल्याण के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। उन्होंने बताया कि गरीबी को दूर करने के लिए निम्नलिखित नीतियों को लागू करना चाहिए। जैसे व्यापक कृषि सुधार कार्यक्रम, मानव एवं गैर मानव के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रम, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, मानव संसाधन विकास कार्यक्रम, व्यापार और औद्योगिक संवर्धन, सरकारी सहायता। (H Ramkrishna2013)।

हॉलर और अन्य ने ग्रामीण युवाओं और गैर ग्रामीण युवाओं में शैक्षिक आकांक्षाओं के दृष्टिकोण पर शोध किया । उन्होंने बताया की ग्रामीण और गैर ग्रामीण युवाओ की शैक्षिक आकांक्षाओं में अंतर काफी कम है। और इस विसंगत का लगभग आधा हिस्सा ग्रामीण और गैर ग्रामीण परिवारों के बीच सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुस्थापित विचलन जिम्मेदार है। इसलिए इस छोटे अंतर को समाप्त करने का लक्ष्य प्राप्त करने योग्य नहीं है। विसंगत की जड़े परिवार की गतिशीलता के पैटर्न में निहित है, जो काफी हद तक शिक्षकों की पहुंच से बाहर है। उद्देश्य केवल विसंगत को कम करना है, तो यह ग्रामीण युवाओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं को बढ़ाकर पूरा किया जा सकता है।(Haller, Virkler1993)। ब्रीन कहते हैं कि विकासात्मक मार्गदर्शन कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण छात्रों की आकांक्षाओं की जरूरत को पूरा किया जा सकता है। आकांक्षाएं जल्दी शुरू होती है और वह जीवन भर विकसित होती रहती हैं। इसीलिए बच्चों में प्रारंभिक शिक्षा से ही वातावरण में कई वयस्को द्वारा सकारात्मक आकांक्षाओं का निर्माण करने में मदद की जा सकती है। जिसमें माता–पिता, शिक्षक, परामर्शदाता, समुदाय के सदस्य आदि (Dorothi tish breen1989)। बिलप्रीबल और अन्य अमेरिका में शोध एवं छात्रवृत्ति के अध्ययन से पता चलता है कि अमेरिका के युवा संकट में है। परिवार के ढांचे में बदलाव, अप्रभावी शैक्षिक प्रथाओं और तेजी से आत्म विनाशकारी युवा संस्ति के परिणाम स्वरुप शैक्षिक परिणाम कम हो रहे हैं।(Bill Preeble and other1989)। ऑस्ट्रेलिया के ग्रामीण समुदाय पर हाईस्कूल स्तर के बच्चों पर व्यावसायिक रुचि के शोध से पता चलता है। कि वर्ष 10 वर्ष के बाद देश के ग्रामीण इलाकों में शिक्षित छात्रों को शहरी केंद्रों में प्रवास करना चाहिए। जिससे वह व्यावसायिक पसंद का ज्ञान हासिल कर सके। और ग्रामीण मजदूर वर्ग की अदृश्यचिंता को दूर किया जा सके।(Ken Stivens1995)। अमेरिका में ग्रामीण क्षेत्रों में वैश्विक अर्थव्यवस्था सामाजिक, आर्थिक रूझान के संदर्भ में शोध से पता चलता है। कि स्कूल का समर्थन करने से अमेरिका में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी दर कम हुई है। वहीं दूसरी ओर आर्थिक भविष्य के लिए स्कूल अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। क्योंकि माध्यमिक शिक्षा के बिना परिवार का भरण पोषण करना कठिन होता जा रहा है।(David Mackgranahan 1994)। बेन वाइट ने अपने शोध पत्र "ग्रामीण युवा आज और कल" में युवा समावेशी कृषि और ग्रामीण विकास के संबंधों की चर्चा करते हैं। उनका मानना है कि .षि विशेष रूप से छोटी जोत वाली खेती अधिकांश निम्न और मध्यम आय वाले देशों में युवा रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत है। ग्रामीण युवाओं की आकांक्षाओं पर किए गए शोध से पता चलता है कि बहुत से युवा कृषि से विमुख नहीं है। लेकिन कृषि की वर्तमान उपेक्षित स्थिति और भूमि तक पहुंच की कमी के कारण एक स्वतंत्र किसान बनने की लगभग असंभवता है। युवा लोगों और उनकी हितों को स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत संवादों, संगठनों, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आंदोलन में मुख्यधारा में लाना और बुनियादी ढांचे में निवेश जो ग्रामीण स्थानों को युवा पुरुषों और महिलाओं के रहने और काम करने के लिए अधिक आकर्षक बना सकते हैं।(Ben White2019)। नाइजीरिया में ग्रामीण विकास परियोजना के प्रति युवाओं के . ष्टिकोण की जांच की गई। अध्ययन में जिन चरों पर विचार किया गया उनमें युवाओं की व्यक्तिगत विशेषताएं एवं ग्रामीण विकास परियोंजना के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण। अध्ययन के लिए उद्देश्य पूर्ण ढंग से 80 उत्तरदाता का चयन किया गया। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि अधिकांश उत्तर दाता युवा संगठन से संबंधित है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में युवा आवश्यक मानव है, और उन्होंने ग्रामीण विकास परियोजना में भाग लिया है। तथा ग्रामीण विकास परियोंजना का प्रभाव उत्तरदाता की दृष्टिकोण पर पड़ता है। यह एक सकारात्मक सूचकांक है। सरकार को ग्रामीण विकास योजना के लिए आवश्यक धन उपलब्ध कराना चाहिए (MG Olujide2008)। नेहाजॉन पनाकल एवं डॉ अर्चना सिंह युवा और सतत ग्रामीण विकास के बीच संबंध निर्धारित करने के लिए व्याख्यात्मक संरचनात्मक मॉडल का उपयोग करने का सुझाव देते हैं। जिसमें उन्होंने ग्रामीण विकास और समृद्धि के लिए युवाओं के योगदान का आकलन करना है।(Nehajoan Panackal, Dr-Archana Singh2015)। भूटान में ग्रामीण विकास के संदर्भ में कृषि में युवा धारणा और रोजगार की संभावना पर अध्ययन किया गया। इसमें भूटान के रॉयल विश्वविद्यालय के चयनित युवाओं पर डाटा एकत्र किया गया। जवाब देने में शिक्षक किसान भी शामिल थे। शोध से पता चलता है कि हाई स्कूल में ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले किसान माता पिता के साथ युवा छात्रों का मानना है कि कृषि रोजगार के लिए संभावित क्षेत्र हो सकता है। युवाओं का सुझाव है कि पर्याप्त तकनीकी, वित्तीय सहायता से लाभदायक टिकाऊ खेती से युवा उद्यमियों को आकर्षित किया जा सकता है।(Tshering Pelzom, Om katel2018)। युवा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

और ग्रामीण विकास पर शोध में कहा गया है कि वैश्विक नौकरियों के संकट ने युवा लोगों की भेद्यता को बढ़ा दिया है। जैसे उच्च बेरोजगारी, काम पाने के लिए निम्न गुणवत्ता वाली नौकरियां, युवा लोगों की विभिन्न समूहों के बीच अधिकतम बाजार असमानता, श्रम बाजार में अलगाव इसके लिए ILO ने "युवा रोजगार संकट : कार्यवाही के लिए काल" तैयार किया गया जो बहुपक्षीय प्रणाली में युवा रोजगार पर नीतियों और कार्यवाही के बढ़ते समन्वय का आवाहन करता है। (Sara Elder, Hein de Haas2015)। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण वित्त बाजार निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्र को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नीति निर्माण, योजना बनाने में ग्रामीण क्षेत्र के विकास में ग्रामीण बाजार का ज्ञान महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। (Mario B Lamberte] Joseph lim1987)। ग्रामीण उत्तरी अमेरिका में श्रम बचत तकनीकी प्रगति, परिवहन लागत में कमी और बढ़ती घरेलू आय के कारण एक बड़ा आर्थिक परिवर्तन हुआ है। जिससे ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और सुविधा संपन्न हुए हैं।(Elena G Irwin and other2010)। दक्षिण एशिया में सतत विकास में युवाओं की भूमिका के संदर्भ में कहा गया है। कि श्रम शक्ति के कौशल को विकसित करने और गरीबी में कमी के लिए श्रमबाजार के आवश्यक सुधार के महत्व को जोर देना चाहिए। SDG 8 का उद्देश्य निरंतर समावेशी और सतत आर्थिक विकास पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सभी के लिए अच्छे काम को बढ़ावा देना है।इसी लक्ष्य का लक्ष्य विकासशील अर्थव्यवस्था में एक सभ्य प्रति व्यक्ति आर्थिक विकास और उत्पादकता को हासिल करना और बनाए रखना है। इसे प्राप्त करने के लिए रचनात्मकता नवाचार और उद्यमिता को अनलॉक करने के लिए बाजार और प्रतिस्पर्धा सुधारने की आवश्यकता होती है। (Anam Khan, Asif Javed, Other2016)। ग्रामीण युवा और शैक्षिक लक्ष्य के बारे में कहा गया कि क्या ग्रामीण युवा शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं।? जिसमें लड़के और लड़कियों की शैक्षिक आकांक्षाएं समान होती हैं। पत्र में कहा गया है कि पारिवारिक पृष्ठभूमि जो ग्रामीण लड़कियों के लिए अधिक मायने रखती हैं। इसलिए ग्रामीण लड़कियां को पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लेने से समान शैक्षिक लाभ नहीं मिलता है। इसके विपरीत पुरुष आकांक्षाएं और परिवारिक पृष्ठभूमि प्रक्रियाओं का परिणाम कम होता है। इसलिए उन्हें शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का परिणाम अधिक मिलता है। (Debra L Blackwell] Diane k Mclaughlin1989)।

अध्ययन के उद्देश्य–

1 ग्रामीण विकास के विभिन्न क्षेत्रों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, कृषि संबंधी एवम नवाचार में युवाओं की भूमिका का अध्ययन करना है।

2 ग्रामीण विकास से युवाओं की मौजूदा स्थिति जीवन शैली, मनोवृति, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन का अध्ययन करना ।

अध्ययन का परिसीमांकन– यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद के युवाओं से प्राप्त उत्तरों पर लिखा गया है, जो ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित हैं। इस शोधपत्र में प्राथमिक के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

शोध पद्धति– इस शोधपत्र में तथ्य संकलन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के अंतर्गत चयनित प्रतिदर्श से साक्षात्कार अनुसूची एवं ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से तथ्य संकलन किया गया। तत्पश्चात प्राप्त आंकड़ों का वर्गीकरण एवम विश्लेषण किया गया।

परिणाम एवं विवेचना– साक्षात्कार अनुसूची एवं ऑनलाइन प्रश्नावली तथा विभिन्न प्रतिवेदन के माध्यम से 50 उत्तर दाताओं से तथ्य संकलित किया गया। प्राप्त आंकड़ों का स्वरूप गुणात्मक था जिन्हें मात्रात्मक स्वरूप प्रदान करने हेतु अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

उपरोक्त सर्वे के परिणाम इस प्रकार से है..

कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में – ग्रामीण क्षेत्र में का प्रमुख व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन रहा है। पहले कृषि एवं पशुपालन परंपरागत तरीके से होता था। लेकिन वर्तमान समय में युवाओं ने वैज्ञानिक तरीके से उन्नत कृषि एवं पशुपालन का महत्वपूर्ण उदाहरण पेश किया है। तथा अपनी आय में बढ़ोतरी की है। वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में संविदा खेती, बटाईदारी खेती (फसल साझेदार), सामुदायिक कृषि प्रचलन में है। सर्वे के अनुसार 95 प्रतिशत ग्रामीण परिवार प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि में लगे हुए है। वहीं 80 प्रतिशत ग्रामीण परिवार पशुपालन के कार्य में लगे हुए है।

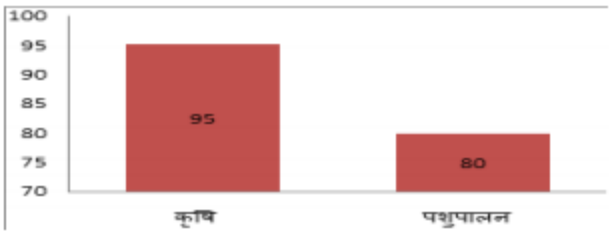

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

सामाजिक क्षेत्र में– ग्रामीण समाज में सामाजिक जीवन को पुनर्गठित करने में युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, क्योंकि युवाओं में नए विचारों के साथ सामंजस्य करने एवं परिवर्तन को स्वीकार करने में अग्रणी होते हैं। अनेक वाद विवाद एवं विचलन में युवाओं को मध्यस्थता की भूमिका अदा करते देखा गया है। इसके साथ ही सांस्कृतिक गतिविधियों (विवाह, अन्यसमारोह) प्राकृतिक संकट (बाढ़, सूखा, महामारी) धार्मिक क्रियाकलापों में युवाओं की लोगों के प्रति मदद एवं सहभागिता बढ़ती ही जा रही है जो ग्रामों को एक सूत्र में बांधने का काम करती है।

पंचायती राज प्रणाली के संदर्भ में– राजनीतिक क्षेत्रों में विशेषकर पंचायती राज के संदर्भ में युवाओं ने प्रमुख रूप से सक्रियता दिखाई हैं। एक ओर बीडीसी, प्रधान, डीडीसी में प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होकर नेतृत्व कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर अनेक राजनीतिक नेताओं के प्रतिनिधि बनकर युवा नेतृत्व कर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ ही अन्य राजनीतिक क्षेत्रों में युवाओं की सहभागिता बढ़ी है। सर्वे में पाया गया है कि मतदाता युवा नेतृत्व को अधिक पसंद कर रहे हैं तथा सबसे अधिक निर्वाचित युवा ग्राम पंचायत के सदस्य(50 प्रतिशत) के रूप में उसके बाद क्षेत्र पंचायत सदस्य (३० प्रतिशत) के रूप में तथा सबसे कम प्रधान पद(20 प्रतिशत) के लिए मिले।

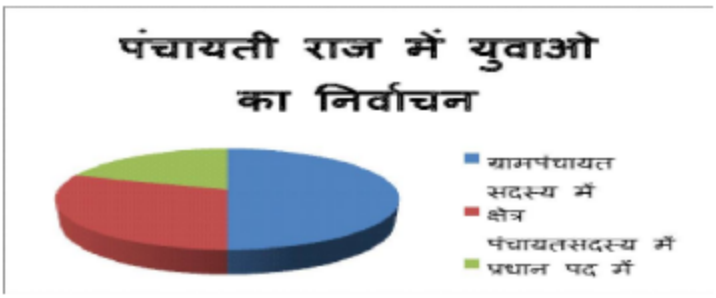

कारोबार के संदर्भ में– ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को अनेक क्षेत्रों से संबंधित पाया गया है। अर्थात जिस युवक के पास आय के बहु स्रोत हैं। वे सशक्त एवं समृद्ध पाए गए हैं। सर्वे में पाया गया की वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में युवा अनेक व्यावसायिक कार्य कर रहे हैं जैसे इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में 20 प्रतिशत किराना की दुकानदारी 20 प्रतिशत रेहड़ी पटरी, कारीगरी एवं मजदूरी में 35 प्रतिशत कुटीर उद्योग में (आटा चक्की, धान की भूसी मशीन ,बेकरी , एवं कृषि उद्योग)15 प्रतिशत तथा अन्य में 10: सम्मिलित है।

ग्रामीण क्षेत्रों में युवा श्रमिक बाजार– वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के परिप्रेक्ष्य में सबसे बड़ा बदलाव युवा श्रमिक बाजार (मंडी मजदूर) हैं। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत बड़े आधार पर बेरोजगारी उन्मूलन हुआ है। यह विशेषकर कृषि संबंधी स्थानीय जरूरतों को पूरा करती है। मुख्य विशेषता यह है कि युवा श्रमिक इस बाजार में अपने श्रम का स्वयं मूल्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

निर्धारित करते हैं। इससे शहरी क्षेत्र में पलायन भी कम हुआ है। इसमें विशेषकर दलित युवा एवम अन्य कमजोर वर्गों के 80 प्रतिशत के युवा सम्मिलित है।

शोध की सीमाएं–

1 युवाओं में गुणात्मक शिक्षा का अभाव एवं अपर्याप्त ज्ञान।
2 योजनाओं के लाभान्वित होने में कानूनी अड़चनें एवं नौकरशाही की निष्क्रियता।
3 समाज में व्याप्त असमानता एवं बहिष्करण।
4 गांव में सरकार ने बुनियादी अधोसंरचना का विकास किया है लेकिन उसके क्रियान्वयन करने में सिस्टम ने सक्रियता नहीं दिखाई है।

निष्कर्ष– इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज में युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज ग्रामीण समाज के सभी क्षेत्रों कृषि, पशुपालन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, कारोबार, नवाचार, बिजली, ऊर्जा, पानी जैसे क्षेत्रों में युवाओं ने अभूतपूर्व सहभागिता दिखाई है। युवा जो नौजवान हैं, कुशल ज्ञान रखते हैं। उनके पास कार्य करने की क्षमता एवम दक्षता होती है, जो ग्रामीण समाज को नई सोच के साथ दिशा प्रदान कर रहे हैं। जिसके कारण आज गांव परंपरागत स्वरूप खोते जा रहे हैं और वह आधुनिक प्रतिमानों के अनुसार सशक्त एवं समृद्ध हो रहे हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है "कि जब एक युवा सशक्त होता है, तो एक परिवार सशक्त होता है। परिवार से गांव सशक्त होता है और गांव से संपूर्ण समाज सशक्त होता है।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मासिक पत्रिका कुरुक्षेत्र.जनवरी 19. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय. नई दिल्ली.
2. Https://yas.nic.in>sites>filespdf.20-5-21
3. Umeh,G.N&C.N.Odom.2011."Role and constrants of youth associations in agricultural and rural development : Evidence from Aguata L.G.A of Anambra state Nigeria". World journal of agricul tural science 7.5 : 515-519.
4. "Youth participation in development : A guide for development agencies and policy makers".2010.
5. Bennell, P. 2007.,"Promoting livelihood opportunities for rural youth".
6. H. Ramkrishna.2013."The emerging role of NGOs in rural development of India". International journal of social science and interdisciplinary research. vol2: 43-51.
7. Haller, Emile J & Virkler, Sarah.J.1993."Another look at rural non rural differences in students educational aspiration " Journal of research in rural education. 170- 178.
8. Breen, dorothi tish.1989. "Enhancing student aspirations :A goal for comprehensive development guidance programs". Journal of research in in rural education. Vol 6(2)35-38.
9. Preeble, bil & Philips, Patrick & other.1989. "main's aspirations: movement reaching out to youth" journal of research in rural education. vol6(2) 51-59.
10. Stivens, ken.1995."Vocational choice for senior high school students in rural Australian communi ties". Journal of research in rural education. Vol11. 182-186.
11. Mackgrahanahan, David A.1994."rural America in the global economy: socio economic trends" journal off research in rural education. vol10³ 139-148
12. White,Ben. 2019. "Rural youth today and tommorrow" Rural development reports. IFAD. Academia edu.
13. Olujide,MG. 2008. "Attitude of youth towards rural development projects in Lagos state,Nigeria".journal of social science. Vol17(2) 163-167.
14. Panackal, Nehajoan & Singh, Dr Archana. 2015. "Using interpretive structural modeling to deter mine the relation between youth and sustainable rural development". Journal of management and research. Vol 4¹.

*****